## ताप बढ़ा

लगभग दस बजे किसी कारण तापमापी में पारा आधा डिग्री चढ़ गया, इसलिए लैम्प ज़रा नीचे करने के लिए हमें एक कॉपी निकालना पड़ी।

"इसका कारण मेरी समझ में नहीं आता।" मीश्का ने हैरानी से कहा। "सारी रात ताप नीचे जाता रहा और अब फिर चढ़ता जा रहा है। अजीब बात है।"

दोपहर के खाने से पहले ताप और बढ़ जाने के कारण हमें लैम्प फिर नीचे करना पड़ा।

खाने के बाद मीश्का सोफे पर लेट गया और फिर से सो गया। बैठे-बैठे मैं कुछ अकेला-सा महसूस करने लगा, इसलिए अपने एलबम में सोए हुए मीश्का के चित्र बनाने लगा। सोते हुए लोगों के चित्र बनाना हमेशा आसान रहता है, क्योंकि यही एक समय है जब कोई स्थिर रहता है।

थोड़ी देर बात कोस्त्या देव्यात्किन अन्दर आया। मीश्का को सोते देख उसने पूछा, "इसे क्या हुआ है, नींद की बीमारी?"

"नहीं," मैंने कहा। "ज़रा झपकी ले रहा है।"

कोस्त्या ने आगे बढ़कर मीश्का के कन्धे को झँझोड़ दिया। "उठो भाई, कितना सोओगे?"

मीश्का उछल पड़ा।

"ऐं, क्या हुआ? सबेरा हो गया?"

"सबेरा!" कोस्त्या हँस पड़ा। "जनाब, शाम होने को है, शाम। चलो, उठो और बाहर खेलने चलो। देखो तो, सूरज चमक रहा है और पंछी गा रहे हैं।"

"खेलने के लिए हमारे पास समय नहीं है। हमें काम करना है!" मीश्का बोला।

"कौन–सा काम?"

"बड़ा जरूरी काम है।"

मीश्का इनक्युबेटर के पास गया, तापमापी की ओर देखा और चीख पड़ा–

"ऐं, तुम क्या कर रहे हो! बाजार के बकरे की तरह सिर्फ बैठे हो? देखा, यहाँ क्या हो गया है!"

मैंने तापमापी को देखा। पारा फिर 39.5 डिग्री पर था। मीश्का ने जल्दी–जल्दी लैम्प नीचे किया।

"मैं कहता हूँ कि अगर मैं नहीं उठ गया होता तो तुम उसको 40 डिग्री तक चले जाने देते!" वह गुर्राकर बोला।

"तुम हमेशा खुर्राटे लेते रहो तो यह मेरा कसूर नहीं है।"

"यह मेरा कसूर है कि मैं सारी रात नहीं सोया?"

"मेरा भी तो नहीं है," मैंने कहा।

कोस्त्या ने इनक्युबेटर को देखा। "यह क्या है? कोई नया भाप का इंजन?" उसने पूछा।

"बको मत, क्या यह भाप का इंजन जैसा लगता है?"

"अच्छा तो तुम ही कहो क्या है?"

"पहचानो!"

"अं...!" सिर खुजलाते हुए कोस्त्या बोला, "निश्चित ही भाप-टर्बाइन है।"

"बिलकुल गलत। फिर कोशिश करो!"

"ठीक है। तो शायद जेट-इंजन है।"

मीश्का और मैं ठहाका मारकर हँस पड़े। "तुम सैकड़ों साल सोचते रहो तो भी सही नहीं बता सकोगे!"

"अच्छा, तो बताओ क्या है?"

"इनक्युबेटर।"

"ओ, इनक्युबेटर! अब समझा! यह किसलिए है?"

"तुम्हें मालूम नहीं इनक्युबेटर किसलिए होता है?" मीश्का ने पूछा। "यह चूज़े निकालता है।"

"किससे?"

"अरे मूर्ख, अण्डों से, और किससे?" मीश्का ने चिढ़कर कहा।

"ओहो, अण्डों से! तब ठीक है। मतलब यह कि इनक्युबेटर मुर्गी के बदले काम करता है। मैं इसके बारे में सब कुछ जानता हूँ, लेकिन मेरा ख्याल था कि इसे हेनकूपेटर कहते हैं। और अण्डे कहाँ हैं?"

"यहाँ पेटी में।"

"ज़रा दिखा दो, न।"

"बिलकुल नहीं। अगर हर किसी को हम दिखाने लगें तो चूज़े कभी पैदा नहीं होंगे। हाँ, अगर चाहो तो उनको पलटने के समय तक ठहर सकते हो। तब तुम देख भी लोगे।"

"यह कब होगा?"

मीश्का ने और मैंने जल्दी से कुछ हिसाब किया और उससे पता चला कि आठ बजे अण्डों को पलटा जाएगा।

कोस्त्या ने कहा कि वह ठहर जाएगा। मीश्का शतरंज ले आया और हम खेलने बैठ गए।

सच कहें तो तीन जनों के शतरंज में कोई मज़ा नहीं है। क्योंकि असल में खेलते तो दो ही जने हैं। तीसरा सिर्फ पास में बैठकर सलाह देता रहता है। और इससे कुछ फायदा भी नहीं होता। अगर तुम जीत गए तो कहा जाएगा कि तुम्हें मदद मिली थी। और अगर हार गए तो खिल्ली उड़ाई जाएगी। यह कहा जाएगा कि मदद मिलने के बावजूद तुम हार गए। शतरंज एक ऐसा खेल है जिसे सिर्फ दो लोगों को ही खेलना चाहिए और वह भी किसी के दखल दिए बिना।

आखिर घड़ी ने आठ बजाए। मीश्का ने इनक्युबेटर खोला और अण्डों को उलटना शुरू किया। कोस्त्या ने पास खड़े रहकर गिनना शुरू किया।

"दस, ग्यारह," उसने गिन लिया। "ग्यारह अण्डे। तो तुम्हारे पास ग्यारह चूज़े हो जाएँगे?"

"ग्यारह?" मीश्का ने आश्चर्य से दोहराया। "तुमने गलत गिना है। वे बारह थे। किसी ने एक अण्डा ले तो नहीं लिया? यह बड़ी शर्म की बात है। इधर ज़रा-सी झपकी ली और उधर अण्डा गायब! और तुम क्या कर रहे थे?" वह मुझ पर टूट पड़ा। "तुम तो निगरानी कर रहे थे न?"

"सो तो मैं कर रहा था। सारा समय मैं यहाँ था। चलो, हम फिर से गिन लें। कोस्त्या ने ज़रूर गलती की है।"

मीश्का ने गिनती की और अब अण्डे तेरह हो गए।

"देखो," वह गुर्राया। "अब एक अण्डा ज़्यादा है। इसे किसने रखा होगा?"

तब मैंने गिनती की। अण्डे ठीक बारह निकले।

"वाह रे गिनने वाले!" मैंने कहा। "बारह तक भी ठीक गिनना नहीं आता!"

"ओह," मीश्का रुआँसा होकर बोला। "मैंने यहाँ अण्डे गड्डमड्ड कर दिए। एक अण्डा पलटना बाकी था और मुझे याद नहीं कि वह कौन-सा है।"

वह याद करने की कोशिश में था कि तभी माया दौड़ती हुई आई। वह सीधे इनक्युबेटर के पास गई और सबसे बड़े अण्डे की ओर संकेत करके बोली, "इसमें मेरा चूजा है।"

मीश्का को और मुझे गुस्सा आ गया और हमने उसे दूर हटा दिया।

"अगर तुम फिर यहाँ आकर हमें तंग करोगी तो याद रखना, तुम्हें कोई भी चूजा नहीं मिलेगा, हमने कह दिया।"

माया रोने लगी।

"तुमने कटोरियाँ ले लीं। मैं जितना चाहूँ देख सकती हूँ।"

"ओहो, यह बात है? हम भी देख लेंगे," मीश्का ने उसे बाहर धकेलकर दरवाजा अच्छी तरह बन्द करते हुए कहा।

"अब क्या करें?" मैंने पूछा। "क्या सब अण्डों को फिर से पलट दें?"

"नहीं, यह ठीक नहीं होगा, क्योंकि शायद हम उनको पलटकर फिर से उसी तरह रख देंगे, जैसे वे पहले थे। इससे अच्छा यह होगा कि वही एक अण्डा पहले जैसा रहे। आगे हम अधिक सावधान रहेंगे।"

"तुम्हें अण्डों पर निशान लगा देना चाहिए, जिससे तुम्हें पता रहे कि कौन-सा अण्डा तुमने पलट दिया है और कौन-सा नहीं," कोस्त्या ने सुझाव दिया।

"कैसे?" मीश्का ने पूछा।

"उन पर तुम गुणा का चिन्ह लगा सकते हो।"

"नहीं, मैं संख्या लिखूँगा।"

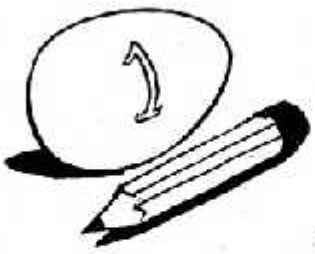

मीश्का ने पेंसिल ली और एक से बारह तक की संख्याएँ क्रमशः सब अण्डों पर लिख दीं।

"अगली बार पलटते समय संख्या नीचे की ओर रहेगी और उसके बाद फिर संख्या ऊपर की ओर जाएगी। अब गलती होना असम्भव है," मीश्का ने कहा और इनक्युबेटर को बन्द कर दिया।

कोस्त्या जाने लगा तो मीश्का ने उससे कहा, "हमारे इनक्युबेटर के बारे में स्कूल में किसी से मत कहना।"

"भला क्यों?"

"पता नहीं...शायद वे हमारी खिल्ली उड़ाएँ।"

"खिल्ली क्यों उड़ाएँगे? इनक्युबेटर बड़े काम की चीज़ है।"

"देखो, तुम जानते हो कि लड़के कैसे हैं। वे हम दोनों को मुर्गियों का जोड़ा कहेंगे। और मान लो कि यह असफल रहा, तब तो हम किसी को मुँह दिखाने लायक भी नहीं रह जाएँगे।"

"लेकिन असफल होगा ही क्यों?"

"कुछ भी हो सकता है। बात उतनी आसान नहीं जितनी तुम समझते हो। हो सकता है कि हम सब गलत ही कर रहे हैं। इसलिए तुम इस बारे में चुप रहो।"

"ठीक है," कोस्त्या बोला। "मैं चुप रहूँगा।"

## माया ने हाथ बँटाया

"कैसा चल रहा है?" दूसरे दिन मीश्का से मिलने पर मैंने पूछा।

"ठीक है। बस, रात भर ताप फिर कम होता रहा।"

"तो क्या तुम कल रात भी नहीं सोए?"

"नहीं, अब मैं ज़रा होशियार बन गया हूँ। मैंने अपने तकिए के नीचे अलार्म घड़ी रख ली थी, जो मुझे हर तीन घण्टे बाद जगा देती थी।"

"लेकिन ताप क्यों कम हुआ? दिन भर तो वह बढ़ता ही रहा था," मैंने कहा।

"अब मुझे पता चल गया है," मीश्का ने कहा। "रात को ठण्ड अधिक रहती है, इसलिए इनक्युबेटर भी जल्दी ठण्डा पड़ जाता है। लेकिन दिन में गर्मी रहती है इसलिए दिन में ताप बढ़ता रहता है और रात में घटता है।"

"लेकिन इसका क्या इलाज करें?" मैंने उससे पूछा। "हम जब तक स्कूल में रहेंगे, तब तक ताप की निगरानी कौन करेगा?"

"शायद माया कर ले। हम उससे कहते हैं।"

मीश्का ने माया को बुलाया और पूछा कि क्या वह हमारे स्कूल के समय इनक्युबेटर पर निगरानी रख लेगी।

"न भाई न, यह काम मुझसे नहीं होगा," माया बोली। "कल ही तुम लोगों ने मुझे कमरे से निकाल दिया था और अब मदद करने को कहते हो।"

"सुनो माया," मैंने कहा। "तुम यह तो नहीं चाहती न कि चूज़े मर जाएँ? लेकिन अगर हमने उनका ध्यान न रखा तो वे मर जाएँगे और यही हालत तुम्हें दिए जाने वाले चूज़े की भी होगी। हम तुमसे अपनी मदद के लिए नहीं कह रहे हैं, लेकिन चूज़ों की तो मदद करो।"

मेरे कहने पर वह ना नहीं कर सकी। इसके बाद मैंने उसको काम के बारे में समझा दिया।

"इस तापमापी को देखो," मैंने कहा। "पारा ठीक 39 डिग्री पर रहना चाहिए। 39 डिग्री..... याद रहेगा?"

"हाँ, हाँ।"

निश्चिन्त होने के लिए जिस जगह पारा टिका रहना चाहिए था, वहाँ मैंने लाल पेंसिल से निशान लगा दिया।

"देखो, गड़बड़ा मत देना," मैंने कहा। "पारा ज़रा-सा भी चढ़ा कि तुम फौरन लैम्प के नीचे से एक कॉपी निकाल देना। जब लैम्प नीचे होता है तो पारा भी नीचे आ जाता है। समझी?"

"हाँ, समझ गई।"

इसके बाद मैंने उसको दिखाया कि अण्डों को कैसे पलटा जाता है और कहा कि ग्यारह बजते ही उसे इनक्युबेटर खोलकर अण्डों को पलट देना होगा।

माया सारी बात समझ गई। फिर भी मैंने उससे सभी हिदायतें दोहराने के लिए कहा, जिससे भरोसा हो जाए कि उसने सब कुछ ठीक समझ लिया है। इसके बाद मीश्का और मैं स्कूल चले गए।

"कहो, कैसा चल रहा है तुम्हारा इनक्युबेटर?" क्लास में प्रवेश करते ही कोस्त्या ने पूछा।

"श–श–श," किसी ने सुन तो नहीं लिया, यह देखने के लिए उसके कन्धे पर से दृष्टि डालते हुए मीश्का फुसफुसाया।

"मैं तो फुसफुसाया था।"

"फुसफुसाया था!" मीश्का गुर्राया। "तुम तो ज़ोर से चीख रहे थे।"

"जाने दो यार, मैं चुप रहूँगा। लेकिन सुनो, मुझे और लड़कों को भी बताने दो न।"

"अगर तुमने ऐसा किया तो फिर कभी हमारे पास मत आना। तुमने इस बात को गुप्त रखने का वचन दिया था और अब तुम...."

"न भाई न, मैं बिलकुल चुप रहूँगा। लेकिन मुझे एक शानदार बात सूझी है। प्राकृतिक इतिहास के घण्टे में मैं मारिया पेत्रोव्ना को तुम्हारे इनक्युबेटर के बारे में बताऊँगा। वे बहुत खुश होंगी।"

"ज़रा कहकर तो देखो ! तुम मारिया पेत्रोव्ना से कहोगे तो पूरी क्लास सुन लेगी।"

"ठीक है, नहीं कहूँगा। अब मैं मुर्दे की तरह खामोश रहूँगा।"

कोस्त्या अपने मुँह को हाथ से ढँककर वहाँ से चला गया। लेकिन साफ नज़र आता था कि हमारे इनक्युबेटर की बात किसी से कहने के लिए वह बैचेन हो रहा है।

पाठ शुरू हुए। लेकिन इनक्युबेटर की चिन्ता के मारे मीश्का से चुप नहीं बैठा जा रहा था।

"माया ने कुछ गलती कर दी तो?"

"लेकिन वह कर क्या सकती है?"

"तापमापी को देखना ही भूल जाए।"

"लेकिन मैंने उसे सख्त ताकीद कर दी है।"

"मान लो वह घर बैठे-बैठे ऊबकर बाहर खेलने चली जाए?"

"उसने वायदा किया है कि नहीं जाएगी।"

"और अगर उसने इनक्युबेटर में रखी अपनी कटोरियाँ ले लीं, तो?"

"वह ऐसा कुछ नहीं करेगी।"

"हो सकता है बल्ब ही खराब हो जाए। तो फिर हम क्या करेंगे?"

प्राकृतिक इतिहास के घण्टे में मीश्का ने इतनी बातचीत की कि मारिया पेत्रोव्ना ने हमें अलग कर दिया। क्लास की दूसरी ओर से मुझे घूरता हुआ मीश्का बरसाती बादल के समान बैठा था। और मानो मामले को अधिक बिगाड़ देने के लिए ही कोस्त्या अपने मुँह पर हाथ रखकर ज़ोर से फुसफुसाया "ए! तुम्हारे इनक्युबेटर के बारे में मैं मारिया पेत्रोव्ना को बता रहा हूँ।"

मीश्का अपनी जगह पर ही बल खाते-खाते फुसफुसाया, "दगाबाज! चुगलखोर!!"

लेकिन तब तक कोस्त्या अपना हाथ ऊपर उठा चुका था।

"क्या कोस्त्या?" मारिया पेत्रोव्ना ने पूछा

मीश्का ने कोस्त्या की ओर तना हुआ घूँसा दिखाया।

"मारिया पेत्रोव्ना, इनक्युबेटर क्या होता है?" कोस्त्या ने सरल भाव से पूछा।

मारिया पेत्रोव्ना ने इनक्युबेटर की जानकारी देना शुरू किया। उन्होंने कहा कि बहुत-बहुत पहले लोगों ने अण्डों को एक खास तापमान तक गरमाकर बिना मुर्गियों के चूज़े निकालना सीख लिया था। दो हज़ार वर्ष पहले प्राचीन मिस्र तथा चीन में भी इनक्युबेटर थे। पुरातत्वविदों को प्राचीन मिस्र के लोगों द्वारा बनाए गए इनक्युबेटर मिले हैं। बेशक, वे बहुत बड़े थे और उनमें एक साथ कई हज़ार अण्डे सेये जा सकते थे।"

"मेरी जान-पहचान के दो लड़कों ने खुद ही इनक्युबेटर बनाया है," कोस्त्या बोला। "आपके ख्याल में क्या वे अण्डों से चूज़े निकाल सकेंगे?"

"घरेलू इनक्युबेटरों से भी हम चूज़े निकाल सकते हैं," मारिया पेत्रोव्ना ने उत्तर दिया। "लेकिन यह बड़ा कठिन काम है। कारखाने में बने इनक्युबेटर में ताप तथा नमी को ठीक रखने के तरह-तरह के साधन होते हैं, लेकिन घरेलू इनक्युबेटरों की बड़ी देखभाल करना पड़ती है। अगर तुम्हारे मित्रों में लगन और धीरज है तो वे ज़रूर सफल होंगे। लेकिन अगर वे हमारे मीश्का और कोल्या की तरह हैं, तो मुझे डर है कि कुछ भी हाथ नहीं आएगा।"

"क्यों?" मीश्का यकायक बोल उठा।

"क्योंकि तुम तो कक्षा में भी ठीक तरह नहीं रहते हो और पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते हो," मारिया पेत्रोव्ना ने कहा और फिर पढ़ाने लगीं।

उस दिन हम स्कूल से बाहर आ रहे थे कि वीत्या स्मिर्नोव ने लपककर हमें पकड़ लिया और कहा कि प्रकृति-प्रेमी मण्डल में काम करने की आज हमारी पारी है।

"अरे नहीं, आज हम काम नहीं कर सकते," मीश्का ने बेचैन होकर कहा। "हमारे पास ज़रा भी समय नहीं है।"

"तुम्हारे पास तो कभी भी कुछ करने को समय नहीं होता। अगर तुम्हें कभी आना ही नहीं था, तो तुम मण्डल में शरीक ही क्यों हुए? आजकल बसन्त है। यही तो डटकर काम करने के दिन हैं। हमें पंछी-घर तैयार करना है।"

"हम पंछी-घर बाद में तैयार करेंगे।"

"लेकिन पंछी तो अब आना शुरू करने ही वाले हैं।"

"नहीं, वे नहीं आएँगे।"

"क्या मतलब? तुम्हारे ख्याल में पंछी तुम्हारा इन्तजार करेंगे?"

"हो सकता है कुछ देर इन्तजार ही करें।" मीश्का बोला।

हम हाँफते हुए घर आए। खैर यह थी कि सब कुछ ठीक था। बल्ब खराब नहीं हुआ था और ताप बिलकुल ठीक था। इनक्युबेटर के पास माया अपनी जगह पर बैठी थी। हमने उसको शाबाशी दी और उसे सैर करने भेज दिया।

## आफत!

समय से तापमापी पर ध्यान रखना, हर तीन घण्टे के बाद अण्डों को पलटना और पानी के जल्दी से भाप बन जाने के कारण खाली हुई टंकी और लकड़ी की कटोरियों को फिर से भर देना....यही हमारा रोज का बँधा ढर्रा हो गया। यह कोई ऐसा काम तो नहीं था जिसे मेहनत भरा कहा जाए, लेकिन पूरे समय सावधान रहना पड़ता था। नहीं तो कुछ न कुछ जरूर हो जाता था। कभी पारा यकायक बढ़ जाता या कभी हम अण्डों को पलटना भूल जाते। पूरे समय हमें इनक्युबेटर का ही ध्यान रखना पड़ता था।

मीश्का का काम सबसे मुश्किल था क्योंकि उसे रात में निगरानी रखनी पड़ती थी। उसे पूरी रात की नींद कभी न मिल पाती। इसलिए दिन भर वह सर्दियों में मक्खी की तरह बेजान रहता। खाने के बाद वह अक्सर रसोई-घर के टेबिल पर झपकी ले लेता। और उस वक्त मैं अपनी चित्रकारी की कॉपी निकाल लेता और उसमें उसके चित्र बनाया करता।

पाँच दिन और पाँच रात यही होता रहा। छठे दिन स्कूल में घण्टे के ऐन बीच ही मीश्का को नींद ने घेर लिया। टीचर ने उसको झाड़ लगाई और पूरी क्लास ने उसकी खिल्ली उड़ाई।

मीश्का को बेशक इससे बहुत दुःख हुआ। हर किसी को दूसरों की हँसी उड़ाने में मजा आता है, लेकिन अपनी खिल्ली उड़ना किसी को भी अच्छा नहीं लगता।

इससे भी बुरी बात यह रही कि उसी दिन लड़कों को दिखाने के लिए मैं अपने बनाए चित्र ले आया था। उन्होंने झट पहचान लिया कि ये चित्र विभिन्न मुद्राओं में सोए हुए मीश्का के हैं – लेटे हुए, बैठे हुए तथा आधे खड़े हुए।

"तुम तो यार पूरे कुम्भकर्ण हो," त्योशा कूरोच्किन ने मीश्का से कहा।

"इसने तो दुनिया-भर का रिकॉर्ड तोड़ दिया है!" सेन्या बोब्रोव ने साथ दिया। "अफीमचियों की तरह ऊँघता रहता है, चौबीसों घण्टे!"

चित्र एक हाथ से दूसरे हाथ में जाते रहे। हर कोई मजेदार बातें करता और ज़ोरों से हँसता।

"ये बेवकूफी भरे चित्र यहाँ लाने की तुम्हें क्या पड़ी थी?" मुझ पर झपटते हुए मीश्का ने पूछा।

"मुझे क्या पता था कि इन्हें ये इतने मजेदार लगेंगे?" मैंने कहा।

"तुमने जान-बूझकर ऐसा किया है, जिससे पूरी क्लास मेरी खिल्ली उड़ाए। अच्छे दोस्त रहे तुम। आगे से मैं तुम्हारे साथ कोई वास्ता नहीं रखूँगा।"

"मीश्का, कसम से, यह कान मैंने जान-बूझकर नहीं किया। ईमान से, नहीं। अगर मुझे पहले से मालूम होता कि ऐसा होगा तो मैं कभी तुम्हारा चित्र नहीं बनाता।" मैंने कहा।

लेकिन मीश्का ने दिन भर मुझसे बात नहीं की। शाम को उसने कहा, "अच्छा हो कि इनक्युबेटर को अपने घर ले जाओ और मेरे भद्दे चित्र बनाने की बजाय खुद रात में निगरानी का काम करो।"

"मुझे कोई इंकार नहीं," मैं बोला। "तुमने पाँच रात निगरानी की, अब मेरी बारी है।"

हम इनक्युबेटर को मेरे घर ले आए। और अब मुझ पर मुसीबत आना शुरू हो गई। हर रात मैं अपने पास अलार्म घड़ी रखता जो आधी रात को ठीक मेरे कानों में टनटना उठती। मैं जाग उठता और लड़खड़ाता हुआ रसोई-घर में जाता। वहाँ ताप देखता, अण्डों को पलटता और फिर लड़खड़ाता हुआ बिस्तर की ओर वापस आता। आम तौर पर तो मुझे नींद ही नहीं आती। लेकिन कहीं ज़रा-सी झपकी लगी कि उसी क्षण फिर अलार्म घड़ी टनटना उठती और उसे चूर -चूर करने का मन करता।

रोज सवेरे जागते समय मैं इतनी सुस्ती महसूस करता कि बस उठा न जाता। आधी नींद में ही कपड़े पहनने लगता और अपने को सिर पर से पायजामा खींचते हुए या कमीज़ की बाँहों में पैर घुसेड़ते हुए पाता। एक दिन तो मैंने अपने जूते ही उलटे पहन लिए। लड़कों ने देख लिया और मेरी इतनी खिल्ली उड़ाई कि क्लास में पाठ के बीच में ही मुझे जूते ठीक से पहनना पड़े।

लेकिन सबसे बड़ी आफत दसवीं रात को आई। कह नहीं सकता कि यह कैसे हुआ। मैं घड़ी में चाभी भरना भूल गया या अलार्म बजने पर भी मैंने नहीं सुना। कुछ भी हो, रात को मैं जो सोया तो एकदम सवेरे ही जागा। आँखें खोलकर मैंने देखा तो दिन काफी चढ़ चुका था। पहले मैं समझ नहीं सका कि क्या हुआ, लेकिन तभी मुझे याद आया कि मैं रात में एक बार भी नहीं उठा। बिछौने से कूदकर मैं इनक्युबेटर के पास लपका। तापमापी का पारा 37 डिग्री पर था। जितना होना चाहिए था उससे पूरे दो डिग्री कम। जल्दी-जल्दी मैंने दो कॉपियाँ लैम्प के नीचे ठूँसीं। लेकिन मन में मुझे पता था कि इससे कुछ होना-जाना नहीं है। अब तक अण्डे पूरी तरह से ठण्डे पड़ गए होंगे।

दस दिन के कठिन परिश्रम पर पानी फिर गया। अण्डों के अन्दर भ्रूण अब तक काफी बड़े हो गए होंगे, लेकिन हाय! मेरे निकम्मेपन ने सब बर्बाद कर दिया।

मुझे अपने पर इस कदर गुस्सा आया कि मैंने अपने सिर पर घूँसा जमाया। धीरे-धीरे पारा चढ़ने लगा और 39 डिग्री पर पहुँच गया। उसे देखते हुए दुखी मन से मैं सोचने लगा, "देख, पारा बिलकुल ठीक है। ऊपर से अण्डे बिलकुल पहले जैसे ही दिखाई देते हैं। लेकिन अन्दर, हाय! उनका सर्वनाश हो चुका है और अब चूज़े निकलने की कोई आशा नहीं।"

फिर भी, कौन जाने, शायद कुछ भी नुकसान नहीं हुआ हो। शायद भ्रूणों को नष्ट होने का समय ही न मिला हो। इसका पता कैसे लगेगा? अकेला तरीका यही था कि अण्डों को गर्मी देते रहें और अगर इक्कीसवें दिन चूज़े न निकलें तो समझ लें कि वे मर गए। हो सकता है कि वे अभी जीवित हों। लेकिन इसका पूरा पता और ग्यारह दिन बीतने पर ही चलेगा।

"हाय, हमारा प्यारा कुनबा यहीं खत्म हो गया," मैंने दुखी होकर सोचा। "बारह नन्हे चूज़ों की जगह एक भी न होगा।"

उसी क्षण मीश्का अन्दर आया। उसने तापमापी की ओर देखा और आनन्द से बोला, "वाह! एकदम सही ताप। सब कुछ ठीक चल रहा है। अब मेरी रात-पाली है।"

"नहीं," मैंने कहा। "अच्छा रहेगा कि मैं ही करता रहूँ। तुम बेकार क्यों तकलीफ उठाते हो?"

"बेकार क्यों?"

"मान लो कि चूज़े न ही निकलें?"

"ठीक, मान लिया कि न निकलें, तब तो तुम्हें भी इतना काम करने की क्या ज़रूरत है? देखो हम दोस्त हैं सो हम दोनों को अपने-अपने हिस्से का काम करना चाहिए।"

मैं कुछ उत्तर न दे सका। अपना अपराध स्वीकार कर लेने का साहस मुझमें नहीं था। इसलिए मैंने चुप रहने का ही निश्चय किया। मैं जानता हूँ कि यह ठीक नहीं था, लेकिन इसके सिवा कोई चारा भी नहीं था।

## पायोनियर सभा

कोस्त्या हमसे मिलने रोज़ आता था और फिर जाकर साथियों को बताता कि अण्डे किस तरह सेये जा रहे हैं। बेशक उसने यह नहीं बताया था कि मीश्का और मैं ही वे लड़के हैं जिन्होंने इनक्युबेटर बनाया है। उसने कुछ इस तरह गढ़ रखा था कि वे लड़के किसी दूसरे स्कूल में पढ़ते हैं।

"मैं उन लड़कों से मिलना चाहता हूँ," वीत्या स्मिर्नोव ने एक दिन कहा।

"भला किसलिए?"

"वे लोग दिलचस्प लगते हैं। काश, हमारे प्रकृति-प्रेमी मण्डल में भी ऐसे ही लड़के हों! हम भी सब कुछ बड़ी अच्छी तरह कर सकते थे. लेकिन मीश्का और कोल्या जैसे लड़कों के साथ कुछ भी नहीं किया जा

सकता। वे कुछ भी काम करना नहीं चाहते। उन्होंने पेड़-पौधे लगाने में कुछ सहायता नहीं दी और अब वे पंछी-घर भी नहीं बना रहे हैं...."

"उन लड़कों ने भी पेड़-पौधे नहीं लगाए," कोस्त्या ने मीश्का और मेरी ओर आँख मारते हुए कहा।

"हाँ, लेकिन उनकी बात दूसरी है। वे और काम में तो लगे हुए हैं।"

वीत्या को कभी ख्याल भी नहीं आया कि जिन लड़कों के बारे में कोस्त्या बता रहा है, वे हम ही हैं। और सचमुच ही हमें बहुत काम करना पड़ता था। इस इनक्युबेटर की वजह से हम पढ़ाई पर भी ध्यान नहीं दे पा रहे थे और नतीजे के तौर पर हम दोनों को अंकगणित में पाँच में से दो ही नम्बर मिले।

अलेक्सान्द्र येफ़ेमोविच ने मुझसे ब्लैक बोर्ड पर एक सवाल हल करने को कहा। मैं नहीं कर सका, इसलिए उन्होंने मुझे दो नम्बर दिए। इसके बाद उन्होंने मीश्का को बुलाया और उसे 2+ नम्बर दिए। हम थे भी इसी लायक। हमने ज़रा भी पढ़ाई नहीं की थी। लेकिन फिर भी इतने बुरे नम्बर पाना अफसोस की बात थी।

"तुम्हारी बात इतनी बुरी नहीं है," मीश्का बोला। "तुम्हें सिर्फ 2 नम्बर मिले हैं, लेकिन मुझे तो 2+ मिले हैं।"

"अरे बुद्धू, 2+ दो से ज्यादा होता है," मैंने कहा।

"बकवास! 2+ का अर्थ तीन थोड़े ही होता है, या होता है?"

"हाँ, है तो वह 2 के ही बराबर।"

"फिर '+' किसलिए है?"

"मुझे पता नहीं।"

"मैं बताता हूँ। दो नम्बर हमें ज्यादा न खलें, इसलिए उसके आगे '+' लगा दिया जाता है। यह ऐसा ही है जैसे कह दिया जाए – लो तुम्हें एक सुन्दर-सा '+' दे दिया। लेकिन दो तो दो ही रहता है न? इसी से बुरा लगता है।"

"भला, क्यों?"

"कारण कि इससे हमारी मूर्खता सिद्ध होती है। देखो, अगर हम मूर्ख नहीं होते, तो केवल दो नम्बर यह दिखाने को काफी होते कि हम कुछ जानते ही नहीं हैं। लेकिन मूर्ख को 2+ दिए जाएँगे, जिससे वह यह न सोच ले कि उसके साथ ठीक बर्ताव नहीं किया गया। लेकिन मैं मूर्ख कहलाना नहीं चाहता हूँ। कभी 2– नम्बर भी मिल सकते हैं," वह कहता गया। "इसमें मुझे कोई तुक नहीं दिखाई देता। दो नम्बर मिलने का अर्थ ही यह है कि हम कुछ नहीं जानते। लेकिन कुछ नहीं से भी कम क्या जानोगे?"

"बिलकुल ठीक है," मैंने कहा।

"यही तो मुझे कहना है!" मीश्का बोला। "2– का मतलब है तुम कुछ नहीं जानते और न ही जानना चाहते हो। अगर तुमने कुछ पढ़ाई ही नहीं की, तो तुम्हें दो ही नम्बर मिलेंगे। लेकिन अगर तुम आलसी हो,

बदनाम हो, तो तुम्हें '2–' ही दिए जाएँगे, जिससे तुम्हें कुछ महसूस हो। मिलने को तो एक नम्बर भी मिल सकता है," वह उसी रौ में कहता गया।

लेकिन वह और कुछ कह नहीं पाया, क्योंकि तभी अलेक्सान्द्र येफ्रेमोविच ने हमें अलग बिठा दिया। आखिरी छुट्टी के समय जेन्या स्कवोर्त्सोव ने कहा, "पढ़ाई खत्म होने के बाद रुक जाना। हमारी सभा होगी।"

"ओह, लेकिन हम बिलकुल नहीं रुक सकते, हमें फुर्सत नहीं है," मीश्का ने और मैंने बताया।

"तुम्हें रुकना होगा," जेन्या बोला, "क्योंकि तुम दोनों के बारे में ही तो हमें चर्चा करनी है।"

"क्यों, हमने क्या किया?"

"सभा में तुम्हें सब कुछ पता चल जाएगा।" जेन्या ने बस इतना ही कहा।

"क्या खूब!" मीश्का बोला। "हमें बुरे नम्बर क्या मिले कि ये सभा करने जा रहे हैं। वह सोचता है कि टोली का नायक होने के कारण वह हर किसी के बारे में सभा कर सकता है। जरा ठहरो, जब खुद उसे ही 2 नम्बर मिलेंगे, तब देखेंगे कि यह जनाब सभा करते हैं या नहीं!"

"उसको 2 नम्बर कभी नहीं मिलेंगे, वह लगकर पढ़ाई करता है," मैंने कहा।

"तुम क्यों उसकी तरफदारी कर रहे हो?"

"मैं किसी की तरफदारी नहीं करता।"

"जाने दो यार, लेकिन अब हमें सभा में तो जाना पड़ेगा," मीश्का बुदबुदाया।

"कोई बात नहीं," मैंने कहा। "माया इनक्युबेटर की निगरानी कर रही है।" और हम सभा के लिए ठहर गए।

"आज हम नम्बरों और आचरण के बारे में चर्चा करने जा रहे हैं," जेन्या स्कवोर्त्सोव ने कहना शुरू किया। "आजकल कुछ लड़के क्लास में बुरा आचरण कर रहे हैं। वे एक-दूसरे के साथ कुलबुलाहट करते हैं, गप्पे लगाते हैं और दूसरों के काम में दखल देते हैं। मीश्का और कोल्या ही सबसे बड़े अपराधी हैं। गप्पे लगाने के कारण इन दोनों को कई बार अलग बिठाना पड़ा है। यह नहीं चलेगा। यह बहुत ही बुरा है। और आज इस सबके ऊपर इन दोनों को सिर्फ 2 नम्बर मिले।"

"हम दोनों को एक ही से नम्बर नहीं मिले। मुझे 2+ मिले हैं," मीश्का बोला।

"इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता," जेन्या ने कहा। "तुम दोनों को दूसरे विषयों में भी ज्यादा बुरे नम्बर मिल रहे हैं।"

"दूसरे किसी भी विषय में हमें 2 नम्बर नहीं मिले और मुझे सिर्फ रूसी में 3 नम्बर मिले हैं," मीश्का बोला।

"नहीं, इसको '3–' नम्बर मिले हैं," वान्या लोज़्किन बोल उठा।

"तुम बीच में टाँग मत अड़ाओ," मीश्का ने कहा।

"क्यों नहीं, यह पायोनियरों की सभा है। जो चाहूँ सो कहने का मुझे अधिकार है।"

"तुम्हें पहले इजाज़त लेनी चाहिए।"

"ठीक है, मैं इजाज़त माँगता हूँ। दोस्तो, सच कहूँ, तो ये दोनों जने आजकल किसी कारण होमवर्क बिलकुल नहीं करते और इसलिए इनको कम नम्बर मिल रहे हैं। इनसे पूछा जाए कि यह कारण क्या है।"

"बिलकुल ठीक, बताओ क्या बात है? यह जानने का हमें अधिकार है," जेन्या ने कहा।

"कोई कारण नहीं है," मीश्का ने उत्तर दिया।

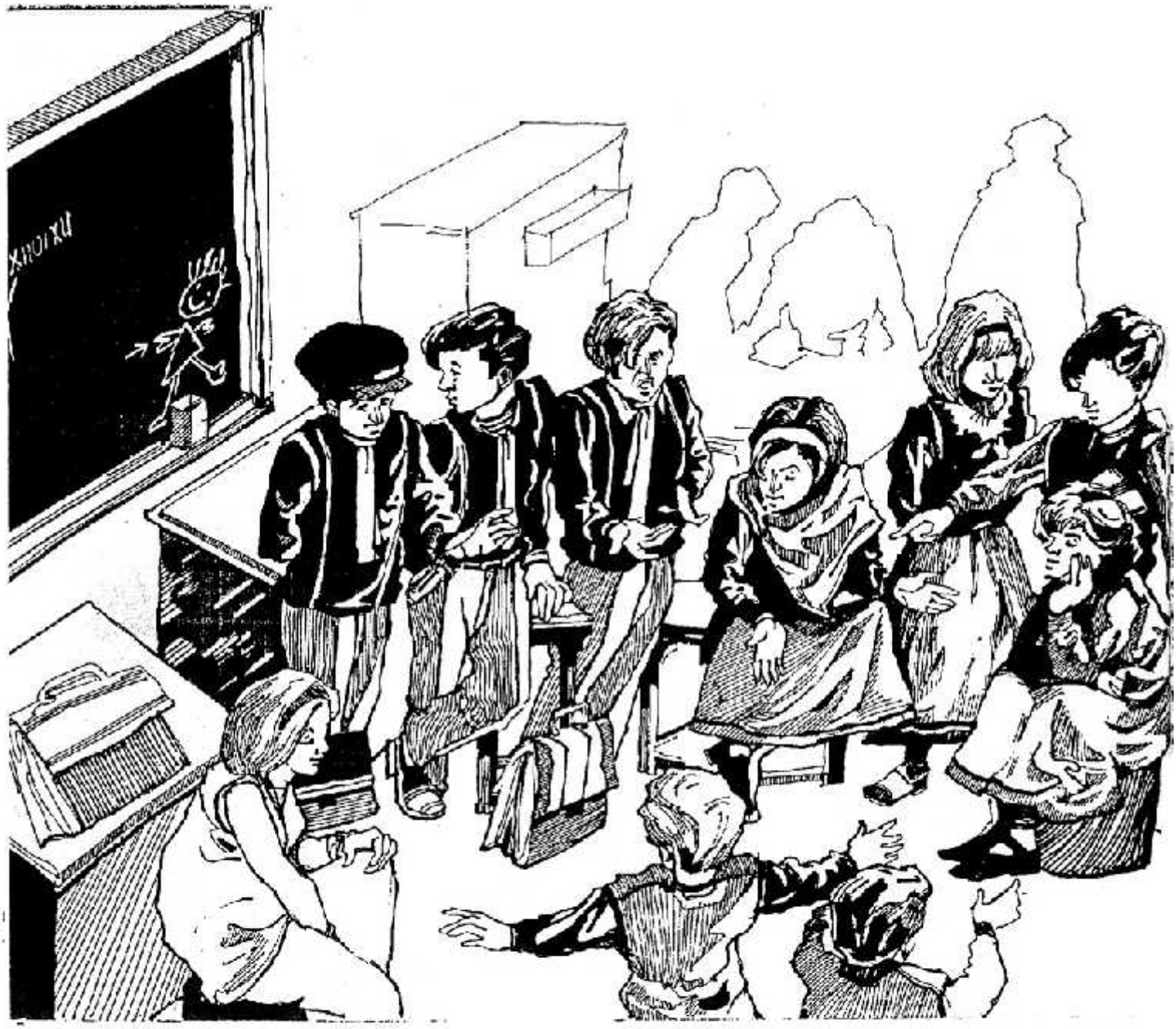

"मैं जानता हूँ कि क्या बात है," त्योशा कूरोच्किन बोला। "क्लास में सारा समय ये बोलते रहते हैं और अध्यापक की ओर ध्यान नहीं देते; इतना ही नहीं, घर पर भी ये पढ़ाई नहीं करते। मेरी राय में इनकी बड़बड़ बन्द करने के लिए इन्हें सदा के लिए अलग कर देना चाहिए।"

"तुम हमें अलग नहीं कर सकते," नीश्का बोला। "हम दोनों मित्र हैं। तुम किसी भी तरह मित्रों को अलग नहीं कर सकते, या कर सकते हो?"

"अगर मित्र होने से सिर्फ नुकसान ही पहुँचता हो, तो ऐसा करना ही सबसे अच्छा है," सेन्या बोब्रोव ने कहा।

इसी समय कोस्त्या हमारे बचाव के लिए खड़ा हुआ। "आज तक कभी किसी ने सुना है कि दोस्ती से भी किसी का नुकसान हो जाता है?" उसने पूछा।

"इनकी दोस्ती से होता है, क्योंकि ये हर चीज़ में एक-दूसरे की नकल करते हैं। अगर एक बोलने लगा, तो दूसरा भी बोलेगा। एक अपनी पढ़ाई नहीं करना चाहता, तो दूसरा भी नहीं करेगा। अगर एक को 2 नम्बर मिले, तो दूसरे को भी उतने ही मिलेंगे। जी नहीं, ऐसा नहीं चलेगा। इन दोनों को अलग करना ही होगा, यह बात है!" वीत्या स्मिर्नोव ने कहा।

"एक मिनट," कोस्त्या बोला। "हम उनको जब चाहें अलग कर सकते हैं। लेकिन हमें यह देखना चाहिए कि क्या इनकी मदद की जा सकती है। मान लो कि उनके पास पढ़ाई के लिए समय ही नहीं बचता है, तो?"

"क्या कहते हो, पढ़ाई के लिए समय नहीं बचता?"

"हाँ, मान लो कि ये किसी बहुत बड़े काम में लगे हुए हैं।"

इस पर सेन्या बोब्रोव हँस पड़ा। "बड़े काम में? यह क्या हो सकता है?"

"मान लो कि ये एक इनक्युबेटर बना रहे हैं।"

"इनक्युबेटर?" सेन्या फिर ज़ोर से हँस पड़ा।

"हाँ, इनक्युबेटर। ज़रा सोचो, क्या यह कोई आसान काम है? क्या तुम्हें मालूम है कि ताप का ध्यान रखने के लिए ये रात-रात भर जागते रहते हैं? शायद उधर ये दिन-रात परिश्रम करते हैं और इधर हम उनको झिड़कियाँ सुनाते हैं। हो सकता है कि....."

"मैं भी जानूँ कि यह भेद की बात है क्या," गुस्से में आते हुए जेन्या ने कहा। "क्या इन्होंने सचमुच ही इनक्युबेटर बनाया है?"

"हाँ," कोस्त्या ने कहा।

"तुमने जिन लड़कों का ज़िक्र किया था, इन्होंने उनकी नकल की है।" वीत्या बोला।

"नहीं," कोस्त्या ने कहा। "इन्होंने किसी की भी नकल नहीं की है। ये वही लड़के हैं जिनके बारे में मैंने बताया था।"

"क्या?"

"हाँ, यही बात है।"

"लेकिन, लेकिन तुमने तो कहा था कि वे किसी दूसरे स्कूल के लड़के हैं।"

"मैंने ऐसे ही मजाक में कहा था।"

सब लड़कों ने मीश्का को और मुझे घेर लिया।

"तो तुमने खुद ही इनक्युबेटर बनाया है?"

वीत्या स्मिर्नोव ने कहा, "यह बड़ी शर्म की बात है! सच्चे प्रकृति-प्रेमी कभी ऐसा नहीं करते। इनक्युबेटर के बारे में तुमने चुप्पी क्यों साध ली! क्या तुमने सोचा नहीं कि ऐसी बात में हमें भी दिलचस्पी होगी? क्यों तुमने यह बात छिपाकर रखी?"

"हमने सोचा कि तुम हमारी खिल्ली उड़ाओगे," हमने कहा।

"भला खिल्ली क्यों उड़ाते? इसमें मजाक की बात क्या है? उलटे हमने तुम्हारी मदद ही की होती। हम बारी-बारी से ताप पर ध्यान रख लेते। तुम्हें आराम मिल जाता और अपने सबक तैयार करने के लिए समय भी मिल जाता।"

"मित्रो," वादिक जैत्सेव ने कहा। "इस इनक्युबेटर के काम में हमें भी हाथ बँटाना चाहिए।"

"बिलकुल ठीक!" सब लड़के चिल्लाए।

वीत्या ने बताया कि खाने के बाद वह हमारे यहाँ आएगा और फिर हम हर किसी को बारी देने का टाइम-टेबल बना लेंगे।

इसके बाद सभा समाप्त हुई।

## मददगारों ने मदद की

खाने के बाद लगभग सारा ही प्रकृति-प्रेमी मण्डल मीश्का के रसोई-घर में एकत्र हो गया। सबको इनक्युबेटर दिखाया गया और उसके बारे में जानकारी दी गई। गर्मी देने का साधन कैसे काम करता है, ताप की देखरेख हम कैसे करते हैं, और नियत समय पर अण्डों को कैसे पलटते हैं। इसके बाद हम टाइम-टेबल बनाने के लिए बैठे। इसके पहले वीत्या स्मिर्नोव के सुझाव पर हमने ड्यूटी देने वाले लड़कों के लिए एक नियमावली तैयार की।

हर दिन स्कूल खत्म होने के बाद दो लड़के हमारे पास आ जाते। मीश्का तथा मैं उनको बता देते कि क्या-क्या करना है और फिर शेष दिन के लिए इनक्युबेटर उनके सुपुर्द कर देते। बारी-बारी से वे थोड़ा समय निकालकर खाने के लिए घर जाते तथा अपना सबक तैयार करते। यह देखना भी उनके काम का ही हिस्सा था कि मीश्का और मैं पढ़ाई करने की बजाय कहीं इनक्युबेटर के इर्द-गिर्द तो नहीं मण्डराते रहते हैं।

इसके बाद वीत्या ने टाइम-टेबल बना दिया जिससे हर किसी को पता रहे कि किस दिन उसकी ड्यूटी होगी। हमने इसे दीवार पर टाँग दिया।

"इसमें हमारे नाम क्यों नहीं है?" मीश्का ने पूछा। "क्या हमें बिलकुल हटा दिया गया है?"

"रात का काम कौन करेगा?" वीत्या ने उत्तर दिया। "तुम लोग बारी-बारी से रात का काम करोगे।"

इसके बाद जेन्या ने सब लड़कों को भेज दिया। "आज जो लड़के ड्यूटी पर हैं, उनको छोड़कर और सब चले जाएँ," उसने कहा। "यूँ ही भीड़ लगाने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

जेन्या, वीत्या, मीश्का और मेरे अलावा बाकी सब लड़के चले गए। "तुम दोनों भी जाओ," जेन्या ने हमसे कहा।

"हम कहाँ जाएँ?"

"जाकर अपना सबक तैयार करो।"

"लेकिन यहाँ कुछ गड़बड़ हो गई, तो?"

"ऐसा कुछ नहीं होगा। और कुछ हुआ तो मैं तुम्हें बुला लूँगा।"

"तब ठीक है। लेकिन देखो, कहीं भूल न जाना।"

इस तरह मीश्का को और मुझे पढ़ाई करने के लिए बैठना पड़ा। हमने रूसी भाषा और भूगोल का अपना काम किया और गणित का एक सवाल भी हल कर लिया। वैसे सवाल तो दो दिए गए थे, लेकिन दूसरा बड़ा कठिन था, इसलिए हमने उसको वैसा ही छोड़ दिया और रसोई-घर की खबर लेने गए।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" जेन्या ने हमारे अन्दर आते ही पूछा। "तुमसे सबक तैयार करने के लिए कहा गया था, न?"

"हाँ, हाँ, हमने कर भी लिया।"

"कर लिया? जरा अपनी कॉपियाँ तो दिखाओ।"

"ऐं, यह क्या है," मीश्का बोला। "पूरी जाँच?"

"क्यों नहीं! हमने तुम्हारी देखभाल का जिम्मा लिया है, इसलिए तुम्हारे लिए हम जवाबदेह हैं, समझे?" हम अपनी कॉपियाँ ले आए।

"तुमने तो एक ही सवाल हल किया है और दिए दो गए थे?"

"हम बाद में उसे भी हल कर लेंगे।"

"बिलकुल नहीं, तुम्हें अभी हल करना होगा। अगर तुमने उसे टालना शुरू किया, तो उसके बारे में भूल जाओगे और फिर कल स्कूल बिना कुछ किए पहुँचोगे।"

"हमने एक सवाल तो कर लिया है, न?"

"एक करने से नहीं चलेगा," जेन्या ने दृढ़ता से कहा। "तुम्हें कहावत मालूम है न - 'पहले काम, फिर आराम'।"

इसलिए हमें वापस जाकर उसी सवाल से माथापच्ची करनी पड़ी। हमने बड़ी कोशिश की लेकिन सवाल हल न हो सका। हमने उस पर पूरा एक घण्टा लगाया और इसके बाद हम रसोई-घर में चले गए।

"वह हल नहीं हो रहा," मीश्का बोला। "हर बात हमने ठीक तरह से की है, लेकिन हमारा उत्तर पुस्तक के उत्तर से मेल नहीं खाता है। छपाई की भूल होगी, और क्या?"

"बहुत अच्छे! किताब को ही दोष दो!" जेन्या बोला।

"हाँ, इसके पहले भी कई बार पुस्तक का उत्तर गलत निकला है।"

"बकवास!" जेन्या ने कहा। "चलो, मैं देखता हूँ।"

वह हमारे साथ कमरे में आया और जो कुछ हमने किया था, देखने लगा। सवाल पर उसने भी बहुत सिर खपाया। हर चीज बिलकुल ठीक जान पड़ती थी लेकिन उत्तर सही नहीं आता था।

"मैंने क्या कहा था!" मीश्का ने खुश होकर कहा।

लेकिन जेन्या ने कहा कि कहीं कोई गलती जरूर होगी और वह उसको पकड़कर ही रहेगा। उसने फिर शुरू से सवाल की जाँच की और आखिर गलती ढूँढ ही निकाली। "यह रही," वह बोला। "सात सत्ते?"

"उनचास, और क्या?"

"बिलकुल ठीक, लेकिन देखा तुमने क्या लिखा है? इक्कीस!"

उसने गलती सुधारी और फिर उत्तर ठीक निकल आया। "गलती सिर्फ इसलिए हुई कि तुम लापरवाह हो," उसने कहा और इनक्युबेटर की ओर लौट गया।

हमने अपनी कॉपियों में सवाल उतारा और फिर रसोई-घर में लौट आए।

"सब पूरा हो गया।" हमने कहा।

"शाबाश! जाओ, अब थोड़ा घूम आओ। बाहर की ताज़ा हवा लेना तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा।"

ना-नुकर करने का कोई फायदा नहीं था, इसलिए मीश्का और मैं चले गए।

दिन बहुत अच्छा था। बाहर लड़के वॉली बॉल खेल रहे थे। हम उसमें शामिल हो गए। उसके बाद हम कोस्त्या देव्यात्किन के यहाँ गए। तभी वादिक जैत्सेव भी वहाँ आ गया। और शाम तक हम चारों लूडो और तरह-तरह के खेल खेलते रहे। जब हम घर पहुँचे तो काफी देर हो गई थी। हम सीधे रसोई-घर में गए। वहाँ ज़ेन्या और वीत्या के अलावा वान्या लोज़्किन को भी देखा। उसने कहा कि इनक्युबेटर पर रात को निगरानी रखने के लिए वह अपनी माँ से पूछ आया है।

"अरे, यह क्या बात है!" मीश्का बोला। "ऐसा होता रहा तो मुझे और कोल्या को कुछ भी करने का मौका नहीं मिलेगा। आज वान्या रात को काम करेगा, तो कल दूसरा कोई। ऊँ हूँ, यह मुझे मंजूर नहीं।"

"ठीक है," वीत्या बोला। "मैं तुम दोनों के नाम भी टाइम-टेबल में रख देता हूँ, जिससे तुम्हें भी औरों की तरह बारी मिले।" उसने हमारे नाम सूची में सबसे आखिर में डाल दिए।

मीश्का और मैं हिसाब लगाने लगे कि हम दोनों की बारी कब आएगी और इससे पता चला कि हमारे हिस्से में आएगा सबसे अच्छा दिन, इक्कीसवाँ दिन। वह दिन जब चूज़ों को अण्डों से निकलना चाहिए!

## आखिरी तैयारियाँ

आखिर अब मीश्का और मैं कुछ आराम कर सकते थे। सच कहें तो इससे हमें दुख नहीं हुआ, क्योंकि इनक्युबेटर हमारे लिए बोझ-सा हो गया था। हम दिन-रात उसके साथ बँधे रहते थे और कहीं कुछ भूल न हो जाए, इसके डर से सारा समय उसी के सोच-विचार में रहते थे। अब बिना हमारे सब काम सुचारु ढंग से चल रहा था।

हम प्रकृति-प्रेमी मण्डल में भी अपने हिस्से का काम करने लगे। हमने दो पंछी-घर बनाए और उन्हें अपने बगीचे में टाँग दिया। स्कूल में फूल के पौधे भी लगाए। लेकिन सबसे बड़ी बात यह हुई कि अब हमें सबक तैयार करने को काफी समय मिलने लगा। जब मेरी तथा मीश्का की माँ ने देखा कि हमें फिर से अच्छे नम्बर मिलने लगे हैं, तो उन्हें इस बात से खुशी हुई कि लड़के इनक्युबेटर के काम में हमारी सहायता कर रहे हैं।

जब प्रकृति-प्रेमी मण्डल की बैठक हुई, तो मारिया पेत्रोव्ना ने हमें बताया कि चूज़ों के पैदा होने से पहले क्या-क्या तैयारी करनी चाहिए। उन्होंने हमसे कुछ घास लगाने को कहा, ताकि उन्हें खाने के लिए कुछ ताज़ी हरी चीज़ मिल सके। उन्होंने कहा कि जई बोना सबसे अच्छा है, क्योंकि वह बहुत पौष्टिक होती है और जल्दी-जल्दी बढ़ती है।

अब बोने के लिए जई कहाँ से लाएँ?

"हमें चिड़िया-बाज़ार चलना चाहिए ", वान्या लोज़्किन ने कहा। "वहाँ चिड़ियों के लिए सभी तरह का खाना मिलता है।"

स्कूल के बाद वान्या और जेन्या चिड़िया-बाज़ार गए। दो घण्टे बाद वे जई से भरी हुई जेबों तथा सुनाने के लिए एक लम्बी कहानी के साथ लौटे।

"चिड़िया-बाज़ार में कहीं भी जई नहीं थी। हम सारी जगह घूमे-फिरे। जई के अलावा बाकी सभी चीजें वहाँ थीं : पटुआ, बाजरा आदि-आदि। हमने सोचा कि हमें खाली हाथ ही लौटना पड़ेगा, लेकिन वहाँ से जाने से पहले हमने खरगोशों पर भी एक नज़र डालने का फैसला किया। वहाँ हमें तोबड़े से जई खाता हुआ एक घोड़ा नज़र आया। सो हमने कुछ जई माँग ली।"

"किससे, घोड़े से?" चकित होकर मीश्का ने पूछा।

"वाह रे पगले! घोड़े से क्यों, हमने उसके मालिक से माँगी। वह एक किसान था जो बाजार में खरगोश लाया था। बहुत अच्छा आदमी था वह। उसने पूछा कि हमें जई किसलिए चाहिए और जब हमने बताया कि चूजों के लिए चाहिए तो उसने कहा, "अरे नहीं, चूज़ों को जई कौन खिलाता है!" लेकिन हमने उसे बताया कि हम जई बोकर अंकुर निकालना चाहते हैं, तो उसने कहा कि हम चाहे जितनी जई ले सकते हैं। बस, हमने अपनी जेबें भर लीं।

वान्या और जेन्या ने अपनी जेबों से जई निकाली। हम तुरन्त काम में लग गए। हमने दो उथली पेटियाँ बनाईं, उनको मिट्टी से भरा, ऊपर से पानी डाला और मिलाकर पतला-सा कीचड़ तैयार किया। इसके बाद हमने मिट्टी में जई डाल दी और फिर एक बार अच्छी तरह मिलाकर पेटियों को अँगीठी के नीचे रख दिया, ताकि बीज को गर्मी मिलती रहे।

मारिया पेत्रोव्ना ने हमें बताया था कि पंछियों के अण्डों की तरह पौधों के बीज भी जानदार होते हैं। बीज के भीतर जिन्दगी सोई रहती है। गरम गीली मिट्टी में जाते ही यह जीवन जाग जाता है और बीज बढ़ने लगते हैं। सभी जानदार चीज़ों की तरह बीज भी मर सकते हैं और मरे हुए बीज नहीं उगते।

हमें इस बात का बड़ा डर था कि कहीं हमारे बीज "मरे हुए" ही न हों। इसलिए हम बार-बार पेटियों में झाँकते रहते थे कि वे उग रहे हैं या नहीं। दो दिन बीत गए, फिर भी कुछ नहीं हुआ। तीसरे दिन हमने देखा कि पेटियों की मिट्टी यहाँ-वहाँ तड़क गई है और कहीं-कहीं वह उभर भी आई है।

"यह क्या है?" मीश्का ने आश्चर्य से पूछा। "पेटियों को ज़रूर किसी ने हाथ लगाया है!"

"ऐसी कोई बात नहीं है," ल्योशा कूरोच्किन ने उत्तर दिया। वह उस दिन सेन्या बोब्रोव के साथ ड्यूटी पर था।

"फिर यह मिट्टी इस तरह टूट-फूट क्यों गई है?" मीश्का चिल्लाया। "बीजों को देखने के लिए तुम्हीं ने अपनी उँगलियों से उसे कुरेदा होगा।"

"नहीं, हमने ऐसा कुछ नहीं किया!" सेन्या ने जवाब दिया।

मैंने मिट्टी का एक ढेला उठाया और उसके नीचे बीज को टटोलने लगा। वह फूलकर खुल गया था और उसके सिरे पर एक नन्हा-सा सफेद अंकुर था। मीश्का ने भी एक बीज उठा लिया और देर तक उसको देखता रहा।

"अब मैं समझा क्या बात है!" वह चिल्लाया। "इन्होंने मिट्टी को खुद ही कुरेदा है।"

"किन्होंने?"

"बीजों ने, और किसने! वे जाग गए हैं और अब मिट्टी में से अपना रास्ता निकाल रहे हैं। देखो, मिट्टी किस तरह फूल गई है। मिट्टी में उनके लिए और जगह नहीं बच रही है।"

बीज कैसे उग रहे हैं, यह दिखाने के लिए मीश्का लड़कों को बुलाने दौड़ा। ल्योशा, सेन्या और मैंने मिट्टी में से कुछ और बीज निकाल लिए। इन सब में से अंकुर निकलने लगे थे। जल्दी ही लड़कों ने चारों तरफ भीड़ लगा दी। हर कोई बीज देखना चाहता था।

"देखो," वीत्या स्मिर्नोव ने कहा, "बीज फूट रहे हैं और जिस तरह अण्डों में से बच्चे निकलते हैं, उसी तरह से जई निकल रही है।"

"बिलकुल ठीक," मीश्का बोला। "जई भी जानदार चीज़ ही है। फर्क इतना है कि वह उगती है और एक ही जगह पर रहती है, लेकिन जब अण्डों में से हमारे चूज़े निकलेंगे तो वे इधर-उधर दौड़ेंगे, किकियाते रहेंगे और कुछ खाने को चाहेंगे। वाह, कितना खुश होगा हमारा प्यारा परिवार!"

## सबसे कठिन दिन

मिल-जुलकर काम करने में मज़ा भी आया और समय भी जल्दी कट गया। आखिर इक्कीसवाँ दिन आ गया। उस दिन शुक्रवार था। चूज़ों के लिए सभी तैयारियाँ हो चुकी थीं। हमने कबाड़खाने में से एक बड़ा बर्तन ढूँढ निकाला और उसके अन्दर नमदे का अस्तर बिछा दिया, ताकि उसमें नवजात चूज़ों को गरम रखा जा सके। अब यह गरम पानी के बर्तन पर रखा हुआ था और पहले चूज़े के निकलने के इन्तज़ार में था।

मीश्का और मैं पिछली रात को भी इनक्युबेटर के पास रहना चाहते थे, लेकिन वादिक जैत्सेव ने अपनी माँ से रात की ड्यूटी देने की आज्ञा ले ली थी और वह हमें अपने पास तक आने देने के लिए तैयार नहीं था। "मेरे ड्यूटी पर होते हुए तुम्हें यहाँ मण्डराने की ज़रूरत नहीं है," वह बोला। "तुम जाकर सो सकते हो।"

"लेकिन चूज़ों ने रात में ही अण्डों में से निकलना शुरू कर दिया, तो?" हमने पूछा।

"उसमें चिन्ता की क्या बात है? चूज़े के निकलते ही मैं उन्हें बर्तन में छोड़ दूँगा और सूखने दूँगा।"

"खबरदार, ऐसे ही मत टपका देना," मैंने घबराकर कहा। "चूज़ों को नरमी से हाथ लगाना चाहिए।"

"अरे घबराओ मत, मैं ऐसा ही करूँगा। अब जाओ और सो जाओ। भूलो मत कि कल तुम्हारी ड्यूटी है। इसलिए रात को अच्छी तरह आराम करना ठीक रहेगा।"

"ठीक है," मीश्का मान गया। "लेकिन, भाई इतना करो कि चूज़ों का निकलना शुरू होते ही हमें जगा देना। देखो न, कितने लम्बे समय से हम इसी का इन्तज़ार कर रहे हैं।"

वादिक ने हामी भरी। हम सोने चले गए। लेकिन चूज़ों की चिन्ता में मुझे बहुत देर तक नींद नहीं आई। दूसरे दिन सवेरे मैं बहुत जल्दी जाग उठा और तुरन्त मीश्का के घर दौड़ता गया। वह भी जाग चुका था

और इनक्युबेटर के पास बैठकर अण्डों को देख रहा था।

"अब तक तो मुझे कोई आसार नज़र नहीं आता।"

"शायद अभी समय नहीं हुआ," वादिक बोला।

वादिक जल्दी ही अपने घर चला गया, क्योंकि रात बीत गई थी और हमारी ड्यूटी शुरू हो गई थी। उसके जाते ही मीश्का ने एक बार फिर सभी अण्डों को देखने का फैसला किया। हमने उनको पलटकर देखना शुरू किया कि कहीं अन्दर से किसी चूज़े ने अपनी चोंच से कोई छोटा-सा छेद बनाया है या नहीं। लेकिन किसी भी खोल पर कोई भी छेद नहीं था। हमने इनक्युबेटर को बन्द कर दिया और बहुत देर तक चुपचाप बैठे रहे।

"मान लो कि हम कोई अण्डा तोड़कर देख ही लें कि भीतर चूज़ा है या नहीं?" मैंने सुझाव रखा।

"नहीं, अभी ऐसा नहीं करना चाहिए," मीश्का ने कहा। "चूज़ा अभी भी अपनी खोल में से ही साँस लेता है, अपने फेफड़ों से नहीं। जैसे ही वह फेफड़ों से साँस लेना शुरू कर देगा, वह अपनी खोल खुद तोड़ डालेगा। अगर हमने खोल को जल्दी तोड़ दिया, तो चूज़ा मर जाएगा।"

"लेकिन अन्दर वे ज़रूर जीवित हैं," मैंने कहा। "अगर तुम ध्यान से सुनो, तो शायद भीतर उनको हिलते-डुलते भी सुन लो।"

मीश्का ने इनक्युबेटर से एक अण्डा उठाया और उसको अपने कान से लगा लिया। मीश्का के ऊपर झुककर मैंने भी अपना कान उसके पास लगा दिया।

"खामोश!" मीश्का गुर्राया। "मेरे कान के पास तुम इसी तरह घुर्राटे लेते रहे तो मैं कैसे सुन सकूँगा!"

मैंने अपनी साँस रोक ली। अब एकदम खामोशी थी, इतनी खामोशी कि हम मेज़ पर रखी घड़ी की टिक-टिक भी सुन सकते थे। यकायक दरवाज़े की घण्टी बज उठी। मीश्का उछल पड़ा और अण्डा उसके हाथ से लगभग गिर ही पड़ा। मैंने दौड़कर दरवाज़ा खोला। वीत्या आया था। वह जानना चाहता था कि चूज़ों ने निकलना शुरू किया या नहीं।

"नहीं," मीश्का बोला। "अभी देर है।"

"ठीक है, स्कूल जाने से पहले मैं फिर देख जाऊँगा," वीत्या बोला।

वह चला गया और मीश्का ने फिर अण्डे को बाहर निकालकर कान से लगा लिया। वह काफी देर तक उसी तरह अपनी आँखें बन्द किए ध्यानपूर्वक सुनता रहा।

"मुझे किसी भी तरह की कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती," वह आखिर में बोला।

मैंने भी अण्डे को लेकर सुना। मुझे भी बिलकुल ही आवाज़ नहीं सुनाई दी।

"भ्रूण नष्ट तो नहीं हो गया?" मैंने कहा। "हमें औरों को भी देखना चाहिए।"

हमने एक-एक करके सभी अण्डों को बाहर निकाला और सबको ध्यान से सुना, लेकिन उनमें से किसी ने भी जीवन का कोई भी लक्षण प्रकट नहीं किया।

"सब-के-सब ही तो नष्ट नहीं हो सकते न, या हो सकते हैं?" मीश्का बोला। "उनमें से कम से कम एक तो ज़िन्दा होना चाहिए।"

घण्टी फिर बज उठी। इस बार सेन्या बोब्रोव आया था। "तुम इतनी सुबह क्या कर रहे हो?" मैंने पूछा।

"मैं पूछने आया था कि चूज़े ठीक से निकल रहे हैं?"

"वे निकल ही नहीं रहे हैं," मीश्का ने उत्तर दिया। "अभी समय नहीं हुआ।" उसके बाद सेर्योजा आया।

"क्यों, कोई चूज़ा निकला कि नहीं?"

"तुम बड़े उतावले हो," मीश्का ने कहा। "तुम क्या यह समझते हो कि पौ फटते ही चूज़े निकलना शुरू कर देंगे? अभी बहुत देर है।"

सेर्योजा और सेन्या कुछ देर बैठे और फिर चले गए। मीश्का ने और मैंने फिर से अण्डों की आवाज़ सुनना शुरू किया। "नहीं, कोई फायदा नहीं," वह दुख से बोला। "मुझे कुछ भी नहीं सुनाई देता।"

"कहीं हमें बुद्धू बनाने के लिए तो वे चुप नहीं हैं?" मैंने राय दी।

"अब तक तो उनको खोल को तोड़ना शुरू कर ही देना चाहिए था।"

फिर यूना फिलीप्पोव और स्तासिक लेव्शिन आए और उनके बाद वान्या लोज्किन आया। एक के बाद एक वे आते रहे और स्कूल जाने के समय तक तो ऐसा लगने लगा मानो एक आम सभा ही हो रही हो। हमने माया को बुलाया और बताया कि हमारे स्कूल में रहते समय अगर चूज़े निकलना शुरू कर दें, तो क्या करना चाहिए। इसके बाद हम सबके साथ स्कूल चले गए।

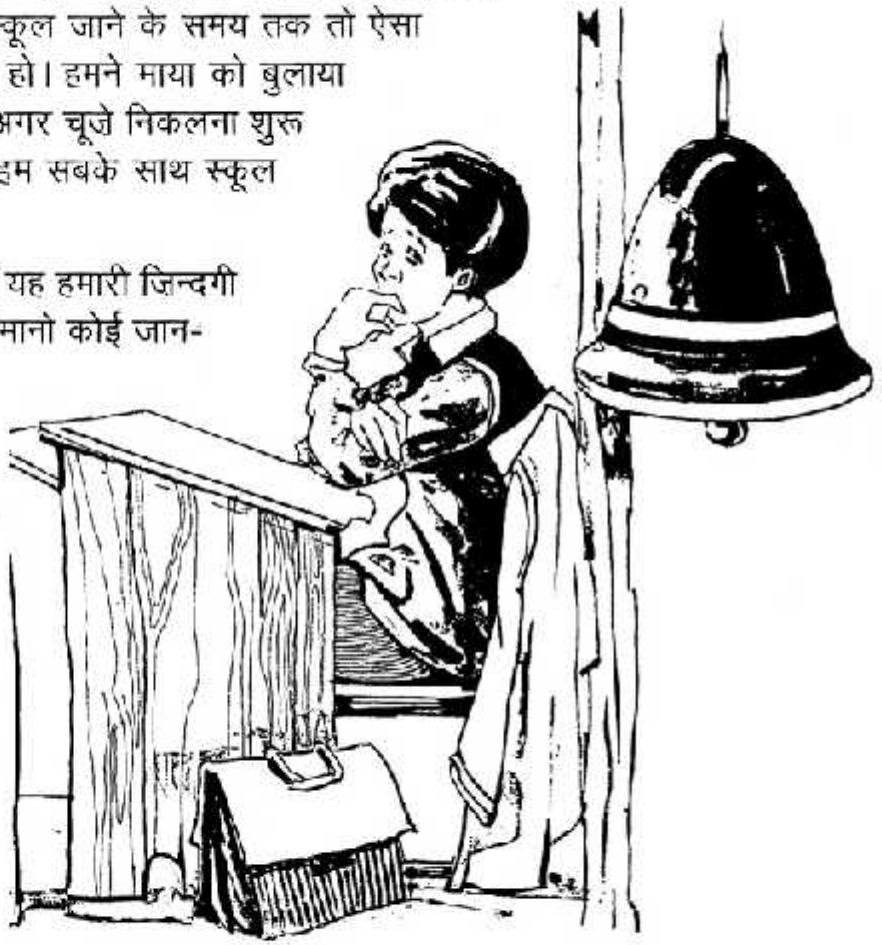

मैं नहीं जानता कि वह दिन हमने कैसे काटा। यह हमारी ज़िन्दगी का सबसे कठिन दिन था। ऐसा लग रहा था मानो कोई जान-बूझकर समय को लम्बा कर रहा था और हर घण्टे को रोज़ के मुकाबले दस गुना लम्बा कर रहा था।

हम सबको इस बात का बहुत डर था कि चूज़े हमारे स्कूल में रहते समय ही निकलना शुरू कर देंगे और अकेली माया कुछ न कर सकेगी। आखिरी घण्टा तो सबसे बुरा था। लगता था मानो कभी खत्म ही नहीं होगा। इतनी देर हो गई थी कि हमें हैरानी होने लगी कि कहीं ऐसा तो नहीं कि हमें घण्टे की आवाज़ ही न सुनाई पड़ी हो। फिर हमने सोचा कि शायद घण्टा खराब हो

गया हो, या स्कूल की दरबान दून्या चाची आखिर का घण्टा बजाना भूलकर घर चली गई हो। और हमें अब कल सुबह तक स्कूल में ही बैठे रहना पड़ेगा।

सारी की सारी क्लास बेचैन और बेबस हो रही थी। हर कोई जेन्या स्कवोर्त्सोव के पास कागज की चिटें भेज-भेजकर पूछ रहा था कि कितने बज गए। लेकिन किस्मत की बात, उस दिन जेन्या अपनी घड़ी घर पर ही छोड़ आया था।

क्लास में इतना शोर था कि अलेक्सान्द्र येफ्रेमोविच को कई बार रुककर खामोश रहने के लिए कहना पड़ा। लेकिन शोर होता रहा। आखिर मीश्का ने यह कहने के लिए हाथ उठाया कि घण्टा खत्म हो चुका होगा, लेकिन तभी घण्टी बज गई और हर कोई उछलकर दरवाजे की ओर झपटा। अलेक्सांद्र येफ्रेमोविच ने हमें फिर से बैठा दिया और कहा कि किसी को भी शिक्षक से पहले बाहर नहीं जाना चाहिए। फिर वह मीश्का की ओर मुड़े, "तुम मुझसे कुछ पूछना चाहते थे?"

"जी नहीं, मैं सिर्फ यह कहना चाहता था कि घण्टा खत्म हो गया है।"

"लेकिन तुमने तो घण्टी बजने से पहले ही हाथ उठाया था, न?"

"मैंने सोचा कि शायद घण्टी खराब हो गई है।"

अलेक्सान्द्र येफ्रेमोविच ने अपना सिर हिलाया, रजिस्टर उठाया और क्लास के बाहर चले गए। लड़के बरामदे की ओर तथा सीढ़ियों पर से नीचे की तरफ झपटे। फाटक के पास काफी भीड़ थी, लेकिन मैंने और मीश्का ने उसमें से रास्ता निकाल लिया। हम लड़कों के आगे-आगे सड़क पर सीधे दौड़ते चले गए। लड़कों की पूरी की पूरी कतारें हमारे पीछे-पीछे भागी आ रही थीं।

पाँच ही मिनट में हम घर में थे। माया अपनी जगह पर बैठी अपनी गुड़िया ज़िनाईदा के लिए एक नई पोशाक सिल रही थी। "कुछ हुआ?" हमने पूछा।

"कुछ नहीं।"

"इनक्युबेटर को देखे तुम्हें कितनी देर हो गई?"

"बहुत देर हुई। अण्डे पलटते वक्त देखा था।"

मीश्का इनक्युबेटर के पास गया। अपनी गर्दनें झुकाए और पंजों के बल खड़े लड़कों ने उसे घेर रखा था। वान्या लोज़्किन अच्छी तरह देखने के लिए कुर्सी पर चढ़ गया था। वह उससे गिर पड़ा और साथ में ल्योशा कूरोच्किन को भी लगभग गिराता गया। लेकिन मीश्का इनक्युबेटर को खोलने की हिम्मत नहीं बाँध सका। उसको देखते डर लग रहा था।

"अरे, खोलो भी उसे! तुम किस चीज का इन्तजार कर रहे हो?" किसी ने कहा। आखिर मीश्का ने ढक्कन उठाया। बड़ी सफेद गोलियों जैसे अण्डे पहले ही की तरह पड़े हुए थे।

कुछ देर मीश्का चुपचाप खड़ा रहा। फिर उसने सावधानी से उनको एक-एक करके सभी ओर से देखते हुए पलट दिया।

"एक भी दरार नहीं है!" उसने भारी दिल से बताया।